गुरू तेग बहादुर : जीवन जीने की कला

डॉ० सुरजीत सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर
बी० एस० एम० पी० जी० कॉलेज, रूडकी
ईमेलः surjeetsinghap@gmail.com

डॉ० (प्रो०) गौतम वीर
प्राचार्य
बी० एस० एम० पी० जी० कॉलेज, रूडकी
ईमेलः gautamveer78@gmail.com

Reference to this paper should be made as follows:

डॉ० सुरजीत सिंह,
डॉ० (प्रो०) गौतम वीर

गुरू तेग बहादुर : जीवन जीने की कला

Artistic Narration 2021,
Vol. XII, No. 2,
Article No. 27 pp. 172-180

https://anubooks.com/artistic-narration-no-xii-no-2-july-dec.-2021/

सारांश

गुरू तेग़ बहादुर की बाणी और उनका व्यवहार हमें सिखाता है कि जीवन की प्रत्येक परिस्थिति में हम अपने व्यवहार को संतुलित कैसे रख सकते है। उनका जीवन प्रतिकूलताओं को बीच अनुकूलता बना कर जीने की सीख देता है। विभिन्न भावों के बीच असंतुलन से ही जीवन में संघर्ष की स्थिति उत्पन्न होती है। गुरू तेग़ बहादुर का जीवन दर्शन बताता है कि जीवन एवं मृत्यु हमारे हाथ में नही है परन्तु अपने जीवन को सुन्दर बनाना हमारे हाथ में ही है। गुरू तेग बहादुर अपनी बाणी में बताते है कि प्रत्येक व्यक्ति में अच्छा बनने का संभावना के बीज हमेशा उपस्थित रहते है इसलिए व्यक्ति को जीवन के उद्देश्य पर अवश्य ही विचार करना चाहिए जिससे वह सुखद, शांत, सद्भावनापूर्ण जीवन जीते हुए समय की रेत पर अपने अमिट पदचिन्ह छोड़ सके।

गुरू तेग बहादुर के 400 साला प्रकाश उत्सव पर गुरू ग्रंथ साहिब में उनके द्वारा उच्चारित श्लोकों एवं उनकी जीवन घटनाओं के आधार पर जीवन जीने की कला को समझने का प्रयास किया गया है।

प्रस्तावना

गुरू तेग़ बहादुर का अवतरण ही समाज में बाह्याडम्बर, असत्य, अनाचार, वर्णभेद, ध ाार्मिक कट्टरता आदि के अन्धकार को दूर करने के लिए एवं समाज को सत्य का मार्ग दिखाने के लिए हुआ था। 'गुरू तेग़ बहादुर समर्पित व्यक्ति थे, योद्धा थे, कवि थे, दार्शनिक थे और उसके साथ ही एक महान हुतात्मा थे। धार्मिक स्वतंत्रता, मानवीय गरिमा तथा व्यक्ति के अधि ाकारों की रक्षा के लिए अन्याय एवं अत्याचार का विरोध करते हुए उन्होंने भारत की राजधानी दिल्ली में अपना बलिदान दिया था'।[1] गुरू तेग़ बहादुर के जीवन आदर्श और जीवन जीने की कला को उनकी बाणी के द्वारा समझा जा सकता है। गुरू ग्रंथ साहिब में गुरू तेग़ बहादुर के 59 पद और 57 श्लोक 15 रागों में संकलित है। 14 रागों में पहले के गुरूओ द्वारा बाणी की रचना की गयी थी परन्तु गुरू ग्रंथ साहिब में राग जैजावंती ही एक ऐसा नया राग है जिसमें केवल गुरू तेग़ बहादुर की बाणी ही दर्ज है। गुरू की बाणी किसी धर्म, जाति या किसी सम्प्रदाय से संबन्धित नही है बल्कि संसार की मानवता को अपने में समेटे हुए है। परालौकिक के साथ लौकिक जगत को जोड़ कर सरल शब्दों में उच्चारित बाणी जीवन के सार की ही व्याख्या करती है। शांति, क्षमा एवं सहनशीलता के प्रतीक गुरू तेग़ बहादुर की बाणी लोगों को प्रेम, एकता एवं भाईचारे द्वारा समाज को दिशा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। गुरू तेग़ बहादुर के जन्म से लेकर महाप्रयाण तक जीवन जीने के तरीके से ही हम जीवन जीने की कला सीख सकते है। उनके विचारों को निम्न शीर्षको के अंतर्गत समझने का प्रयास करेगें।

कर्म से आध्यात्मिकता की ओर

गुरू तेग़ बहादुर के जन्म के विषय में अलग–अलग विद्वानों के अलग–अलग तारीखों का उल्लेख किया है परन्तु अधिकांश प्रकांड विद्वानों ने 1 अप्रैल 1621ई. तदानुसार वैशाख शुक्ल पक्ष पंचमी संवत 1678 को ही गुरू तेग़ बहादुर के जन्म की तिथि को मान्यता प्रदान दी है। रविवार की रात्रि के तीसरे पहर अमृतसर में छठे गुरू हरिगोबिंद के गुरू के महल में हुआ था। अमृतसर का हरि मंदिर लोगों के विश्वास एवं आस्था का केन्द्र था। हरि मंदिर की नींव चौथे गुरू रामदास के समय रखी गयी थी। पांचवे गुरू अर्जुन देव के समय में हरि मंदिर की प्रसिद्वि चारों तरफ फैलने लगी थी क्योंकि हरि मंदिर में गुरू अर्जुन देव द्वारा संकलित आदि ग्रंथ को प्रतिस्थापित किया गया था। उस समय अछूतों एवं निम्न जातियों को मंदिरों में प्रवेश नही था, परन्तु हरि मंदिर बिना किसी भेदभाव के सभी के लिए हमेशा ही खुला रहता था। वास्तव में यह मंदिर समाज में फैली छूआछूत के विरूद्व एक मुहिम का प्रतीक है। इस मंदिर के चारों दरवाजे चारों दिशाओं एवं चारों वेदों एवं स्मृतियों के प्रतीक है। छठे गुरू हरि गोबिंद द्वारा किये तीन विवाह से 5 पुत्र एवं एक पुत्री थी। तेग़ बहादुर की माता का नाम नानकी था।पांच भाइयों में तेग़ बहादुर सबसे छोटे एवं सबके लाडले थे। तेग़ बहादुर के बचपन का नाम त्यागमल था। घर के धार्मिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक माहौल

ने उनके जीवन पर बहुत गहरा प्रभाव डाला था। तेग़ बहादुर का बचपन अमृतसर में बीता। बाबा बुढ्ढा के संरक्षण में तेग़ बहादुर की शिक्षा दीक्षा का शुभारम्भ साढे चार वर्ष की उम्र में हुआ। गुरू हरिगोबिंद ने एक आदर्श पिता की तरह तेग़ बहादुर को छोटी उम्र से ही हर प्रकार की साहित्यिक, सैनिक, संगीत एवं आध्यात्मिक शिक्षा का प्रबंध कर दिया था। बाबा बुढ्ढा जैसे ब्रहम ज्ञानी से आध्यात्मिक शिक्षा, भाई बिधि चंद एवं भाई जैता जैसे जांबाजों से युद्व विद्या, भाई गुरूदास से साहित्य और दर्शन की शिक्षा और अब्दुल्ला एवं बाबक जैसे संगीतकारों से संगीत की शिक्षा एवं अमृतसर के अनेक मौलवी एवं पंड़ित से फारसी एवं संस्कृत की शिक्षा ग्रहण करते थे। तेग़ बहादुर ने न सिर्फ आध्यात्मिकता में कुशलतापूर्वक निपुणता हासिल की बल्कि पंजाबी, ब्रज भाषा एवं संस्कृत में भी प्रभुत्व हासिल किया। संगीत से भी उनका बहुत गहरा लगाव था और उनकी काव्य रचना इस बात का साक्ष्य देती है कि देश की प्रमुख संगीत विधाओं पर उनकी उत्कृष्ट समझ थी। घुडसवारी, तलवारबाजी, तीर धनुष, भाला आदि में कुशल होने के साथ–साथ घोडों की देखभाल करना तेग़ बहादुर के पसंदीदा कार्य थे। रागों को गाना एवं श्रवण द्वारा प्रभु वंदन उन्हें रूहानी शांति प्रदान करता था। संगीत एवं कविता में विशेष रूचि के कारण तेग़ बहादुर ने गुरूबाणी की रचना अनेको रागों में की है। तेग़ बहादुर का विवाह लालचंद एवं बिशन कौर की सपुत्री गुजरी के साथ 11 वर्ष की आयु में 1632 ई. में करतारपुर में हुआ था। जिनसे 1666 ई. में गुरू गाबिंद सिंह पैदा हुए थे।

गुरू अर्जुन देव को तत्कालीन मुगल शासक जहांगीर द्वारा 30 मई 1606 ई. में शहीद कर दिया गया था। उस समय हरिगोबिंद की उम्र मात्र 11 वर्ष थी। बदलते हालातों के अनुसार गुरू हरिगोबिंद ने धर्म के आध्यात्मिक स्वरूप में न्याय की परिकल्पना को भी जोडते हुए उसको व्यवहारिक स्वरूप प्रदान किया था। उन्होनें यह सिद्व किया कि शांति प्रियता का अर्थ कायरता नही होता है। मुगलों द्वारा कमजोर एवं निर्बलों पर किये जा रहे अत्याचारों से रक्षा हेतु धर्म के आध्यात्मिक स्वरूप में नवीनता लाते हुए गुरू हरिगोबिंद द्वारा सैनिक गठन के परम्परा की एक नई शुरूआत की गयी। उन्होने दो तलवारों को एक साथ रखने की एक नई परंपरा प्रारम्भ की। एक तलवार अध्यात्मिकता का प्रतीक थी तो दूसरी धर्म कर रक्षा हेतु अन्याय एवं जुल्म के विरूद्व उठने वाली तलवार थी। इसलिए छठे गुरू हरिगोबिंद इतिहास में मीरी–पीरी के मालिक के नाम से प्रसिद्व हुए। परन्तु गुरू हरिगोबिंद का एकमात्र उद्देश्य दुनिया में अमन एवं शांति, प्यार, सेवा एवं भक्ति की स्थापना करना ही था। 'गुरू हरिगोबिंद के समय में अमृतसर रूहनियत की सर्वोच्चता पर पहुंच गया था। पवित्र सरोवर, हरिमंदिर के प्रति लोगों की श्रद्वा के बीच प्राचीन सौन्दर्य के प्रतीक अकाल तख्त की बढ़ती लोकप्रियता और इन सब के बीच गुरू हरिगोबिंद की चमत्कारिक उपस्थिति ने इस जगह को दुर्लभ आकर्षण एवं अद्वितीय शान का प्रतीक बना दिया था। अकेले एवं समूह में दूर और पास के श्रद्वालु इकट्ठे होकर चारो दिशाओं से ऐसे आने लगे जैसे पतंगे ज्योति की तरफ खींचे चले आते हैं'। उनके द्वारा हरि मंदिर में बनवाया गया अकाल

तख्त सिख समाज में सर्वोच्च संस्था के रूप में उभरा। जिसने भविष्य में सिख शक्ति को एक अलग सामाजिक और ऐतिहासिक पहचान प्रदान की। सेना के गठन पर विशेष ध्यान देते हुए शस्त्र एवं अच्छे घोडों एकत्र किये जाने लगे। गुरू हरगोबिंद की मीरी–पीरी की यह यात्रा सिख इतिहास में आज तक निरन्तर जारी है। जिसकी उत्कृष्टता गुरू गोबिंद सिंह के काल में एवं उसके बाद भी दिखाई देती है। मुगल शासक जहांगीर की मृत्यु के बाद शाहजहां जब हिंदुस्तान का राजा बना तो उसे यह बर्दाश्त नही हुआ कि कुछ मुसलमान गुरू भी गुरू घर को मानने लगे है। जिससे मुगल सेना एवं गुरू हरिगोबिंद के बीच चार लडाईयां हुई थी।

करतारपुर में होने वाली लडाई में तेग़ बहादुर ने भी प्रतिभाग किया था। उस समय तेग़ बहादुर की उम्र मात्र 14 वर्ष थी। इस लड़ाई में वीरता के दुर्लभ कारनामे दिखाये। लडाई में उनकी बहादुरी के कारण पिता ने उन्हे तेग़ बहादुर (तलवार के धनी) का नाम दिया था। बचपन के नाम त्यागमल के बजाए लोग उन्हें तेग़ बहादुर के नाम से पुकारने लगे थे। **इतिहास में यह एक विरला ही उदाहरण मिलता है कि कर्मवाद, ज्ञानवाद की सीढिया चढते हुए भक्तिमार्ग का अनुशरण करने के लिए तत्पर है।** तेग़ बहादुर की विरक्ति जीवन एवं दुनिया को अस्वीकार करने वाला अथवा पलायनवादी नही है बल्कि उनका वैराग्य प्रभावशली रचनात्मकता जीवन की अभिव्यक्ति है। गुरू हरगोबिंद ने अपने पौत्र हरिराय को सन 1644 ई. में गुरू गद्दी सौपी। तेग़ बहादुर उस समय 23 वर्ष के थे। तेग़ बहादुर को गुरू गद्दी के सबसे योग्य व्यक्ति होने के बावजूद गुरू गद्दी नही मिलती है और वह इसका कोई गिला या शिकवा नही करते है बल्कि वह अपने पिता की आज्ञा को शिरोधार्य कर खुद में खुद की तलाश में बकाले में धुनि रमाते है। श्री राम अपने पिता दशरथ की आज्ञा के पालन हेतु 14 वर्ष के लिए वनवास में चले जाते है। तेग़ बहादुर गुरू गद्दी न मिलने का कोई गिला शिकवा नही करते है बल्कि पिता की आज्ञानुसार बकाले चले जाते है। क्यों, किसलिए और कितने समय के लिए, इन सब प्रश्नों के जवाब के बिना। आज पिता की संपत्ति में हिस्सा न मिलने पर अथवा थोडा सा भी कम मिलने पर भाई–भाई आपस में जान के दुश्मन हो जाते है अथवा कोर्ट–कचहरी से भी गुरेज नही करते है। भाईयों में आपस में ईष्या होना एक स्वाभाविक मनोभाव है जो मौका मिलने पर प्रतिद्वंद्विता में बदल जाता है। महाभारत में भाईयों (कौरवों एवं पाण्डवों) में हिंसा का प्रमुख कारण ही लालच था।

आध्यामिकता की ओर

आध्यात्मिकता के लिए गुरू नानक की तरह तेग़ बहादुर भी गष्ह त्याग नही करते है बल्कि उन्होंने परिवारिक जीवन जीते हुए ही आध्यात्मिकता के मार्ग पर चल कर दिखाया है। परिवार को त्यागना आसान मार्ग है परन्तु परिवार के सब भावों के साथ रहते हुए उन सबसे विरक्त रहना कठिन है। तेग़ बहादुर इस कठिन मार्ग पर चल कर लोगों के समक्ष एक आदर्श भी प्रस्तुत करते है कि जीवन के सभी आकर्षणों एवं भावों को सहर्ष स्वीकार करते हुए भी विरक्ति भाव से जीवन को जीया जा सकता है। लगभग 20 साल बकाले में की गयी साधना

एवं अपने प्रति एकांकीपन तेग़ बहादुर के मन में उदासीनता के भाव पैदा नही करते बल्कि वह हमें सिखाते है कि जीवन के सभी रागों, भावों एवं सम्बन्धों के साथ रहते हुए उन सबके प्रति अनासक्त कैसे रहा जा सकता है। गुरू तेग़ बहादुर जानते थे कि बिना मन को समझे जीवन की जटिलताओं को भी नही समझा जा सकता है। मन को जानने से ही स्वयं को जानने की शुरूआत हो जाती है। राग सोरठ में अपने मन को समझाते हुए कह रहे है कि हे मन! तू परमात्मा से प्रेम कर। कानों से गोबिंद के गीत सुनों और जीभ से उसकी स्तुति के गीत गावों।

रे मन राम सिउ करि प्रीत।
स्रवन गोबिंद गुनु सुनउ, अरू गाउ रसना गीति।।

गुरू ग्रंथ साहिब, पेज–631

बाबा बकाला

आठवें गुरू हरिकिशन ने मृत्यु से पूर्व अगले गुरू के संदर्भ में दो ही शब्दों का उच्चारण किया था–बाबा बकाला। तेग़ बहादुर के भाई गुरदित्ता गुरू हरिकिशन के दादा थे और तेग़ बहादुर गुरदित्ता के भाई थे। इस रिश्ते से तेग़ बहादुर उनके दादा भाई यानि बाबा ही थे। गुरू हरिकिशन ने मृत्यु से अगले गुरू के नाम के लिए सिर्फ इशारा ही किया था परन्तु गुरू हरिकिशन ने मृत्यु के बाद हर वह व्यक्ति जो अगला गुरू बनना चाहता था उसने बकाले में अपने अपने तख्त सजा लिये थे और स्वयं को अगला गुरू घोषित करने लगे थे। तेग़ बहादुर के भाई गुरदित्ता के बडे बेटे धीरमल सहित इनकी संख्या 22 थी। इन सबमें धीरमल ने अपने आप को सबसे बडा दावेदार घोषित कर रखा था। इतिहास एकमत है कि असली गुरू को खोजने का श्रेय भाई मक्खन शाह को है। इतिहास में ऐसे संतों की लम्बी सूची मिल जायेगी जिन्होनें अपने शिष्यों का उद्वार किया था। परन्तु ऐसा कोई उदाहरण नही मिलता कि किसी शिष्य ने गुरू की तलाश की हो। धीरमल और उससे जुड़े लोगों को ऐसा प्रतीत होने लगा कि गुरू गद्दी उनसे छीन ली गयी हो। इसे कैसे हासिल किया जाऐ इसके लिए वह षंडयत्र करने लगे। 30 मार्च 1664 ई. में नौवें गुरू की पहचान मिल जाने के बाद भी लगभग एक वर्ष बाद 20 मार्च 1665 में गुरू गद्दी का मिलना बताता है कि दुनिया के उलझावों एवं गुरू गद्दी चाहने वालों के षडयंत्रों के बीच भी गुरू तेग़ बहादुर का जीवन जीने का भाव निर्विकार ही रहा। गुरू तेग़ बहादुर जानते है कि उनका जीवन अब चुनौतियों की खुली किताब है। परन्तु वह इससे भागते नही है बल्कि चुनौतियों को स्वीकार कर लोगों के समक्ष सरल जीवन जीने की कला सबके सामने रखते चलते है। लोगों के प्रेम एवं चढावें को देखकर गुरू तेग़ बहादुर का अपना भतीजा धीरमल गुरू गद्दी हासिल करने के लिए सारी हदें पार करते हुए कुछ मंसदों को अपनी तरफ मिलाकर गुरू तेग़ बहादुर की हत्या का षडंयत्र रचता है। धीरमल अपने साथ लगभग 100 लोगों को लेकर गुरू के घर पहुचता है। गुरू तेग़ बहादुर पर गोली चला देता है। सूरज प्रकाश के लेखक लिखते है कि गोली गुरू के सिर को छूते हुए जाती

है जबकि ज्ञान सिंह तवारिख में लिखते है कि गोली गुरू जी को नही लगती बल्कि उनके पीछे खड़े शिष्य की गोली लगने से मौत हो जाती है जबकि अन्य लेखकों का मानना है कि गोली गुरू को छूकर निकल जाती है। गुरू तेग़ बहादुर का कंधा थोडा जख्मी हो जाता है। गुरू तेग़ बहादुर धीरमल को कोई ताडना, कोई गिला या शिकवा नही करते, शांत चित्त बैठे धीरमल की हदों को देख रहे है। गुरू तेग़ बहादुर का शांत चेहरा उसे और उददे्लित करता है। अपने साथ आये लोगों को धीरमल गुरू घर का बहुमूल्य सामान एवं धन लूटने को कहता है। गुरू तेग़ बहादुर इस लूट का भी कोई विरोध नही करते है। माया के प्रति वह निर्लिप्त थे। माया के आने पर वह खुशी नही मनाते थे न ही उनके चले जाने का उन्हें कोई गम था जबकि धीरमल का उद्देश्य धन अर्जित करना ही था। व्यपार में थोडा सा नुकसान हो जाये अथवा कोई हमारा ध ान छीन ले तो हमारा जीवन दुख एवं गम से भर जाता है। हम उससे बदला लेने अथवा उसकी भरपाई के उपाय करने लगते है। गुरू जी आदर्श प्रस्तुत करते है कि हमारे जीवन के उद्देश्यों से ही हमारी जीवन जीने की शैली प्रभावित होती है। इसीलिए शास्त्र मानते है कि जैसा हम सोचते है, वैसा ही हम करने लगते है और फिर वह हमारा व्यवहार बन जाता है। गुरू तेग़ बहादुर अपने शिष्यों को शांत करते हुए कहते है कि **'क्रोध में व्यक्ति बुरे कर्म करता है। वह अपनी इन्द्रियों और अपने धर्म को खो देता हैं। जब मनुष्य के ह्रदय में क्रोध उमड़ पड़ता है तो ऐसा कौन सा अपराध है जो वह नही करता है। वह अपने माता पिता एवं पूज्य गुरू के खिलाफ पाप करने से भी संकोच नही करता है। जिसकी उसे रक्षा करनी चाहिए वह उसकी ही जान ले लेता है, और केवल कडी भाषा का प्रयोग करता है। वह किसी भी कार्य के लिए पीछे नही हटेगा, भले ही वह उसको करने के लिए अपने अपने प्राणों की आहुति ही दे दे। जीवन से बड़ा कोई बलिदान नही है, कोई भी मूर्ख व्यक्ति इसे जानबूझ कर करेगा। यदि क्रोध ी व्यक्ति अपनी इच्छाओं की पूर्ति नही कर पाता तो उसकी आत्मा जलती है, वह खा या सो भी नही पाता है। दिन रात वह अपने जनून से प्रताडित होता है और उसकी संतुष्टि के लिए अंतहीन योजनाएं बनाता है। इस प्रकार वह दुख में अपना समय व्यतीत करता है'** । मक्खन शाह को मालूम होता तो वह अपने लोगों को लेकर धीरमल से गुरू तेग़ बहादुर से लूटा सामान ही वापस नही लाता बल्कि धीरमल का सामान भी लूट लाता है एवं उस व्यक्ति को भी पकड के गुरू के समक्ष पेश करता है जिसने गुरू तेग़ बहादुर पर गोली चलाई थी। गुरू तेग़ बहादुर दरबार के सामान को छोड़कर धीरमल से लूटे गये सामान को ही वापिस नही करते बल्कि उस व्यक्ति को भी माफ कर देते है जिसने गुरू पर गोली चलाई थी। मक्खन शाह और संगतों को समझाते हुए कहते है कि **'क्षमा करना एक महान कार्य है। क्षमा का दान दीक्षा देने जैसा होता है। क्षमा सभी तीर्थो में स्नान के समान है। क्षमा मनुष्य का उद्धार निष्चित करती है। क्षमा के समान कोई पुण्य नही है। इसलिए उदारपूर्वक इसका अभ्यास करे। इस गुण को कभी न छोडे, बल्कि इसे दिलों में हमेषा बनाए रखे।** डॉ. त्रिलोचन सिंह, गुलाब सिंह की पुस्तक शहीदी

पातशाही नौवीं के आधार पर विस्तार से लिखते है कि इस घटना से व्यथित गुरू तेग़ बहादुर बिना खाना पीना खायें चार दिन तक एकांत चिंतन मनन और अध्यात्म में बिताते है। अब हम स्वयं को इस कसौटी पर रख कर देखे तो स्वयं ही अंतर स्पष्ट हो जाता है। क्या हम अपने दुश्मन को माफ कर सकते है? क्या हम दुश्मनी की प्रतिद्वन्द्विता से बच सकते है? क्या हम ईष्या एवं द्वेष से बाहर निकल सकते है? गुरू तेग़ बहादुर तो इसको जी कर दिखाते है। गुरू तेग बहादुर बकाले से अमष्तसर पहुचंते है तो मसंदो एवं पुजारियों द्वारा हरिमंदिर साहिब के दरवाजे बंद कर दिये जाते है। गुरू हरगोबिंद, गुरू हरिराय एवं गुरू हरिकिशन ज्यादा समय अमृतसर से बाहर ही रहे। गुरूओं की अनुपस्थिति का लाभ उठाकर गुरूगद्दी की चाह रखने वालों ने हरिमंदिर साहिब पर कब्जा जमा लिया था। पृथ्वीचंद के पौत्र हरिजी ने हरिमंदिर साहिब पर नियंत्रण कर रखा था। अमृतसर के मंसदों एवं हरिजी को यह भय था कि गुरू तेग़ बहादुर के आने पर हमें हरिमंदिर साहिब से जाना पड़ सकता है इस ड़र से आपस में सलाह करके हरिमंदिर के चारों दरवाजे बंद छुप गये। दर्शनी ड़योढी का दरवाजा बहुत बढ़ा था उसको बंद करके ताला लगा दिया। गुरू तेग़ बहादुर मंसदों की चालाकियों को समझ रहे थे। सबके लिए समान रूप से खुले रहने वाले प्रवेश द्वार को बंद देखकर गुरू तेग़ बहादुर थोडे से खिन्न होते है। जिस हरिमंदिर साहिब में गुरू तेग़ बहादुर ने बचपन से लेकर जवानी तक जीवन के 23 वर्ष गुजारे हो, जो उनकी नैतिक, आध्यात्मिक और शैक्षणिक गतिविधियों का साक्षी रहा हो वहां के दरवाजे बंद होने पर भी गुरू तेग़ बहादुर कोई शिकायत नही करते। अपने मन को स्थिर एवं शांत रखते है। उनके साथ आयी संगत मंसदों एवं पुजारियों के इस व्यवहार पर क्रोध व्यक्त करती है। भाई मक्खन शाह कहते है कि हे गुरू यह हरिमंदिर आपके दादा ने बनवाया था और यह सभी श्रद्वालुओं के लिए है। आप इजाजत दे तो इन बदमाश पुजारियों को सबक सिखा दे एवं हरिमंदिर साहिब के दरवाजे भी खुलवा दे। इन सब भावों से परे निर्विकार गुरू तेग़ बहादुर अकाल तख्तश के पास बेरी के पेड के नीचे बैठ कर अपने साथ आई संगतों को समझाते हुए कहते है कि **नही! मक्खन शाह, भटके हुए लोगों को पता ही नही कि वह क्या कर रहे है। परमात्मा ही उन्हें राह दिखायेगें। ये लोग झूठ और पाखंड में लिप्त है, जनता को बहुत समय तक नही बरगला पायेगे। जब नानक का आर्शीवाद मिलेगा यह स्थान फिर से पवित्र मंदिर हो जायेगा।** सूरज प्रकाश के अनुसार मक्खन शाह के समझाने पर जब मसंद गुरू तेग बहादुर से माफी मांगने आते है तो गुरू तेग बहादुर कहते है **तुम लोग तो अमृसर के हरिमंदिर के मसंद नही हो, तुम तो तृष्णा की आग से जले हुए हो। गुरू का प्रेम और दया सबके लिए है। मुझे गुरू नानक का आदेश मिला है कि सच्चे नाम को ही दुनिया भर में फैलाया जाये**। अमृतसर से लौटने के बाद गुरू तेग़ बहादुर तरनतारन से होते हुए अपने पैतृक गांव गोइंदवाल गये। गुरू नानक की वाणी का प्रचार प्रसार करते हुए विभिन्न गांवो से होते हुए बकाला लौट गये। गुरू हरिकृष्ण की माता किशन कौर के कीरतपुर निमंत्रण पर गुरू तेग़ बहादुर कीरतपुर के लिए रवाना होते है। मार्ग में माझा एवं मालवा के क्षेत्र के विभिन्न गांवों से घूमते हुए अब तक के

गुरूओं के द्वारा माझा क्षेत्र में धर्म प्रचार के जो केन्द्र विकसित किये थे उनका निरीक्षण करने के साथ–साथ नानक वाणी का प्रचार प्रसार भी करते रहे। उनका यह कार्य आने वाले समय के लिए गुरू गोबिंद सिंह की फौज हेतु महत्वपूर्ण जमीन तैयार करते है। गुरू तेग़ बहादुर मई 1665 ई. में कीरतपुर पहुंचते है। तत्कालीन स्थितियों में मुगलों के साथ गुरू परिवार के रिश्तों एवं औरगंजेब की कट्टर नीतियों के कारण होने वाली राजनीतिक उथल पुथल को देखते हुए गुरू तेग़ बहादुर सिखों के लिए एक सुदृढ़ केन्द्र भी बनाना चाहते थे जो सामरिक दृष्टि से भी उत्तम हो। प्राकृतिक दृष्टि से पर्वतों की तलहटी में बसे माखोवाल गांव का चयन करते है। रानी चम्पा से यह गांव अपनी माता नानकी के नाम पर खरीदते है जिसे नानकी चक कहा गया। लोगों में नैतिक बल के संचार हेतु एवं सिखी के प्रचार प्रसार के लिए स्थापित यह केन्द्र आनंदपुर साहिब के नाम से प्रसिद्व हुआ। यह स्थान साधना एवं समर दोनो दृष्टियों से अनुकूल था। नया नगर भी बस रहा था और गुरू की यात्राएं भी हो रही थी। गुरू तेग़ बहादुर की प्रसिद्वि एवं प्रतिष्ठा में दिन दोगुनी एवं रात चौगुनी बढ रही थी। धीरमल की ईष्या भी बढती जा रही थी। संगतो ने जब गुरू तेग़ बहादुर को बताया कि धीरमल और रामराय मिलकर दिल्ली की हुकूमत के साथ मिलकर गुरू गद्दी प्राप्त करने के लिए आपके खिलाफ षडंयत्र कर रहे है तो गुरू तेग़ बहादुर बोले, **परमात्मा पर हमेशा ही भरोसा रखना चाहिए। वह जो भी करता है, ठीक ही करता है और होता वही है जो परमात्मा की मर्जी होती है। आप लोग चिंता न करे। परमात्मा अच्छा ही करेगा।** गुरू तेग़ बहादुर की यह शिक्षा तब भी उतनी ही खरी थी जितनी आज है। हमारे अधिकांश दुखों का कारण ही यही है कि हम परमात्मा पर उतना विश्वास नही रख पाते है जितना हमें रखना चाहिए। विज्ञान एवं तकनीकी की उन्नति ने हमें स्वयं से दूर किया है जबकि आइंस्टीन ने मरने से पहले कहा था कि प्रकृति के रहस्यों को जानने के लिए मैं सौ बार भी जन्म लूं तो भी कम पडेगे। नानक कहते है लाखों ही आकाश और लाखों ही पृथ्वी है, जिसको जानना मनुष्य की सीमाओं से परे है।

पाताला पताल लख आगासा आगास।
ओड़क ओड़क भालि थके वेद कहनि इक वात

गुरू ग्रंथ साहिब, पेज–5

गुरू तेग़ बहादुर निडर भाव से पूरे देश में घूम–घूम कर लोगों को औरंगजेब के भय से ही नही मुक्त करते रहे बल्कि लोगों को विश्वास भी दिलाया कि न तो किसी का भय मानों एवं न ही किसी को भय दो। जीवन की निस्सारता को समझाते हुए सबको सच्चे मार्ग पर चलने की प्रेरणा देते रहे। वो कहते थेः

जग रचना सभ झूठ है जानि लेहू रे मीत।
कहि नानक थिरू ना रहै जिउ बालू की भीति ।।

गुरू ग्रंथ साहिब, पेज–1429

संदर्भ ग्रंथ

1. Singh, T. (1967). *Guru Teg Bahadur: Prophet and Martyr (A Biography)*, First Edition, Gurdwara Parbandhak Committee, Sis Ganj Chandni Chowk, Delhi
2. Singh, F. & Talib, G.S. (1996). *Guru Teg Bahadur: Martyr and Teacher*, Second Edition, Publication Bureau: Punjabi University, Patiyala, ISBN: 81-7380-282-3.
3. Singha, H.S. & Kaur, S., H.S. (1995). *Guru Tegh Bahadur and Guru Gobind Singh*, Hemkunt Press, New Delhi, 1995, ISBN 81-7010-251-0.
4. Singh, T. & Singh, G.. (2016). *The Short Histort of Sikhs (1469-1765)*, Vol I, Sixth Edition, Punjabi University Patiala, 2016, ISBN: 81-7380-007-3.
5. Aulakh, A.S. (2011). *Shri Gur Pratap Suraj Granth Satik by Kavi Churamani Bhai Santokh Singh,* Part 1, Dr. Chatar Singh Jeevan Singh Amritsar, ISBN 81-7601-685-3, Edition-1
6. Chhibber, K.S. (2005). *Vashawalinama Dasa Patshayia ka: Edited by Payara Singh Padam,* Dr. Chatar Singh Jeevan Singh Amritsar, ISBN: 81-7205-175-1.
7. Sahirai, H.D. (1995). Nauvi Patshahi: Jeevan Katha Guru Teg Bahadur, Part 1 , Dr. Chatar Singh Jeevan Singh Amritsar.
8. Macauliffe, M. A. (1909). *The Sikh Religion, Its Gurus, Sacred writings and Authors*, Vol 4, Oxford, At the Clarendon Press.